जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर

(शिक्षाशास्त्र संकाय)

NEP 2020 के अनुसार 4 वर्षीय स्नातक स्तरीय पाठ्यक्रम

(4 Year U.G. Course Structure as per NEP-2020)

B.A. (शिक्षा) प्रथम वर्ष

सत्र-2023-24

शिक्षा विभाग

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर

ग्राम-मदाऊ, पोस्ट-भांकरोटा, जयपुर-302026

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर

शिक्षाशास्त्र विभाग

(4 वर्षीय स्नातक (B.A.) स्तरीय पाठ्यक्रम)

पाठ्यक्रम के उद्देश्य:-

- ❖ छात्र शिक्षा के सम्प्रत्यय एवं सिद्धान्तों के विषय में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- ❖ छात्र शिक्षा के सामाजिक आधारों के विषय मे विस्तृत रूप से पढ़ सकेंगे।
- ❖ छात्र शिक्षा के दार्शनिक आधारों के विषय मे जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- ❖ छात्र तुलनात्मक शिक्षा की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- ❖ छात्र शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधारों के विषय मे जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- ❖ शिक्षा की समसामयिक समस्याओं के विषय मे जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- ❖ शिक्षा का अन्य शास्त्रों के साथ सम्बन्ध ज्ञात कर सकेंगे।

शिक्षा का सम्प्रत्यय एवं सिद्धान्त

प्रथम प्रश्न पत्र (प्रथम सत्रार्द्ध)

पूर्णांकः- 70+30=100

विद्यार्थी सक्षम होंगे-

- ❖ शिक्षा की प्रकृति एवं प्रकार की व्याख्या करने में।
- ❖ शिक्षा के विभिन्न उपागमों को समझाने में।
- ❖ पाठ्यक्रम की समालोचना करने में।

इकाई प्रथम-

1. शिक्षा का सम्प्रत्यय, अर्थ, परिभाषा, प्रकृति, क्षेत्र, शिक्षा के प्रकार, औपचारिक, अनौपचारिक, निरौपचारिक शिक्षा।
2. शिक्षा के उपागम- दार्शनिक, सामाजिक, ऐतिहासिक एवं मनोवैज्ञानिक उपागम।
3. शिक्षा के उद्देश्य - व्यक्तिगत, सामाजिक, व्यावसायिक एवं लोकतान्त्रिक।
4. शिक्षा के अभिकरण - विद्यालय, परिवार एवं समाज।

इकाई द्वितीय–

1. ज्ञान का अर्थ, प्रकृति, प्रकार, प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा, गुरु-शिष्य सम्बन्ध।
2. शिक्षकः-अच्छे शिक्षक के गुण एवं कर्त्तव्य, शिक्षक प्रेरक, सलाहकार, सुविधाप्रदाता और समस्या समाधानकर्ता के रूप में।

इकाई तृतीय–

1. पाठ्यचर्या एवं पाठ्यक्रम, पाठ्यक्रम के प्रकार।
2. पाठ्यचर्या निर्माण के सिद्धान्त।
3. पाठ्यचर्या विकास की विधि।
4. वर्तमान पाठ्यचर्या के दोष।

इकाई चतुर्थ–

1. बाल केन्द्रित शिक्षा:- अर्थ एवं विशेषताएँ, आधुनिक बाल केन्द्रित शिक्षा के उद्देश्य।
2. आर्थिक विकास में शिक्षा का योगदान।
3. राष्ट्रीय एकीकरण एवं अन्तर- राष्ट्रीय अवबोध में शिक्षा का योगदान।

आन्तरिक मूल्यांकन- 30 अंक

1. विभिन्न शिक्षानीतियों की समालोचना
2. विभिन्न पाठ्यक्रमों के आधार पर प्रतिवेदन तैयार करना।
3. राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय शैक्षिक नीतियों पर प्रतिवेदन तैयार करना।
4. विभिन्न शिक्षाशास्त्रियों के अनुसार शिक्षा

सन्दर्भ ग्रन्थसूची:-

1. Pandey R.S. -Principles of Education
2. Agarwal J.C. -Principles of Education
3. पाण्डेय, रामशकल - शिक्षा के मूल सिद्धान्त।
4. माथुर एस. एस. - शिक्षा के सिद्धान्त।
5. पाण्डेय, राम शकल - शैक्षिक नियोजन एवं वित्त प्रबन्धन।
6. त्यागी, ओंकार सिंह - उदीयमान भारतीय समाज एवं शिक्षा।
7. सोनी, डॉ. रामगोपाल - उदयोन्मुख भारतीय समाज में शिक्षक।

शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार

द्वितीय प्रश्न पत्र (प्रथम सत्रार्द्ध)

पूर्णांकः- 70+30=100

विद्यार्थी सक्षम होंगे-

- ❖ शिक्षा और दर्शन के अर्थ को समझाने में।
- ❖ भारतीय समाज की विभिन्नताओं को समझाने में।
- ❖ दर्शन के विभिन्न तत्त्वों की विवेचना करने में।

इकाई प्रथम-

1. शिक्षा दर्शनः- प्रकृति क्षेत्र एवं आवश्यकता, भारतीय दृष्टिकोण से दर्शन की अवधारणा
2. प्रकृतिवाद एवं आदर्शवादः- अर्थ, शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यचर्या, शिक्षण विधि एवं अनुशासन।

इकाई द्वितीय–

1. प्रयोजनवाद एवं यथार्थवादः- अर्थ, शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यचर्या, शिक्षण विधि एवं अनुशासन, विद्यालय तथा समाज।
2. अस्तित्ववादः- लक्षण तथा शैक्षिक निहितार्थ।

इकाई तृतीय-

1. शैक्षिक समाजशास्त्र का अर्थ एवं आवश्यकता, संस्कृति तथा शिक्षा, समाजिक स्तरीकरण तथा इसका शिक्षा पर प्रभाव।
2. समाजिक गतिशीलता एवं शिक्षा, सामाजिक परिवर्तन, शहरीकरण एवं आधुनिकीकरण।

इकाई चतुर्थ –

1. उदारीकरण, वैश्वीकरण और निजीकरण का अर्थ, अवधारणा तथा शिक्षा पर प्रभाव
2. शिक्षा का स्तर विभाजन –अवधारणा एवं प्रक्रिया।
3. महिला शिक्षा।
4. पृथक्कृत वर्ग जैसे दलित, आदिवासी लोगों के लिए शिक्षा।

आन्तरिक मूल्यांकन- 30 अंक

1. भारतीय एवं पाश्चत्य दर्शनशास्त्र की विवेचना।
2. किसी एक सामाजिक समुदाय पर शैक्षिक प्रतिवेदन तैयार करना।
3. भारतीय संविधान में शिक्षा की स्थिति।

सन्दर्भ ग्रन्थसूची:-

1. सिंह, डॉ एम के - शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार।
2. रूहेला, प्रो. एस. पी. - शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार।
3. सोनी, डॉ रामगोपाल - उदयोन्मुख भारतीय समाज मे शिक्षक।
4. त्यागी, ओंकार सिंह - उदीयमान भारतीय समाज एवं शिक्षा।
5. ओड़, एल. के. - शिक्षा की समाजशास्त्रीय एवं दार्शनिक पीठिका।
6. Chaube S.P. and Chaube A.Philosophical and Sociological Foundation of Education

भारतीय शिक्षा व्यवस्था का विकास एवं चुनौतियाँ

प्रथम प्रश्न पत्र (द्वितीय सत्रार्द्ध)

पूर्णांकः- 70+30=100

विद्यार्थी सक्षम होंगे -

- ❖ प्राचीन, मध्यकालीन, स्वतंत्रता-पूर्व और स्वतंत्रता-पश्चात काल में शिक्षा के विकास को समझने में।
- ❖ पूर्व-प्राथमिक, प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च शिक्षा की विभिन्न चुनौतियों की आलोचनात्मक रूप से व्याख्या करने में।

इकाई प्रथम -

1. भारतीय शिक्षा प्रणाली का ऐतिहासिक विकास- वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली।
2. बौद्ध शिक्षा प्रणाली एवं मध्यकालीन शिक्षा प्रणाली।

इकाई द्वितीय -

1. आधुनिक काल में भारतीय शिक्षा प्रणाली का ऐतिहासिक विकास, स्वतंत्रता-पूर्व काल में शिक्षा।
2. चार्टर्स अधिनियम, मैकाले की शिक्षा नीति, वुड्स का घोषणा पत्र, भारतीय शिक्षा आयोग, कलकत्ता विश्वविद्यालय आयोग, हार्टोग समिति।
3. स्वतंत्रता के बाद की अवधि में शिक्षा : विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग,
4. माध्यमिकशिक्षा आयोग, NPE 1968, 1976, NPE 1986, NEP 2020

इकाई तृतीय -

1. पूर्व-प्राथमिक और प्राथमिक शिक्षा की समस्याएँ:- नामांकन, प्रतिधारण, ड्रॉप-आउट।
2. गुणवत्ता सम्बन्धी समस्या।
3. माध्यमिक शिक्षा की समस्या:- पाठ्यक्रमों का विविधीकरण, शिक्षा का व्यवसायीकरण, परीक्षा सुधार, गुणवत्ता सम्बन्धी चिन्ता।

इकाई चतुर्थ -

1. उच्च शिक्षा की समस्या:- प्रवेश, संगठन पैटर्न, पाठ्यक्रम, स्वायत्तता।
2. स्व-वित्तपोषण, अनुशासन, परीक्षा सुधार एवं गुणवत्ता सम्बन्धी चिन्ता।

आन्तरिक मूल्यांकन 30 अंक

1. विभिन्न शिक्षा स्तरों की समालोचना।
2. एक विद्यालय पर प्रतिवेदन तैयार करना।
3. समावेशी शिक्षा पर प्रतिवेदन तैयार करना।

सन्दर्भ ग्रन्थसूची:-

1. S. N. Mukherji, Education in India, Today & Tomorrow.
2. A. S. Altekar, Education in Ancient India.
3. S. P. Gupta, Bhartiya Shiksha Tatha Iski Samasyayen
4. R. S. Pandey& K. S. Misra, Bhartiya Shiksha Ki Samsamyik Samasyayen.
5. Adaval&Uniyal, Bhartiya Shiksha Tatha Pravartiya.
6. त्यागी, ओंकार सिंह - उदीयमान भारतीय समाज एवं शिक्षा।
7. सोनी, डॉ रामगोपाल - उदयोन्मुख भारतीय समाज मे शिक्षक।

शिक्षा का मनोवैज्ञानिक आधार

द्वितीय प्रश्न पत्र (द्वितीय सत्रार्द्ध)

पूर्णांकः- 70+30=100

विद्यार्थी सक्षम होंगे -

- ❖ शैक्षिक मनोविज्ञान की अवधारणा को समझने में
- ❖ वृद्धि और विकास के बीच अंतर करने में
- ❖ बुद्धि और रचनात्मकता की अवधारणा को समझने में
- ❖ अधिगम, अधिगम के हस्तांतरण और प्रेरणा का वर्णन करने में
- ❖ व्यक्तित्व और मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दों की व्याख्या करने में

इकाई प्रथम-

1. शैक्षिक मनोविज्ञानः- प्रकृति, कार्यक्षेत्र, विधियाँ।
2. वृद्धि और विकासः- अवधारणा, उनके बीच अन्तर, सिद्धान्त।
3. विकास को प्रभावित करने वाले कारकः– वंशानुक्रम एवं वातावरण।
4. किशोरावस्था के दौरान संज्ञानात्मक विकास की विशेषताएँ।
5. सामाजिक, नैतिक और भावनात्मक विकास।

इकाई द्वितीय -

1. बुद्धिः अर्थ, प्रकृति, प्रकार।
2. बुद्धि के सिद्धान्तों का अवलोकन एवं बुद्धि मापन।
3. रचनात्मकताः- अर्थ, प्रकृति, विकास की रणनीतियाँ

इकाई तृतीय -

1. अधिगम- प्रकृति, सिद्धान्तः– प्रयास और त्रुटि, शास्त्रीय अनुबन्धन, क्रिया प्रसूत अनुबन्धन, अन्तर्दृष्टि का सिद्धान्त।
2. सीखने को प्रभावित करने वाले कारक।
3. सीखने का स्थानान्तरणः- प्रकृति, सिद्धान्त, स्थानान्तरण के नियम।
4. प्रेरणाः- संकल्पना, प्रकार, प्रेरणा की तकनीकें, प्रेरणा और अधिगम।

इकाई चतुर्थ -

1. व्यक्तित्व का अर्थ, प्रकृति, सिद्धान्त, प्रकार, व्यक्तित्व का मापन।
2. मानसिक स्वास्थ्य:- अवधारणा, मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले कारक, मानसिक स्वास्थ्य के सिद्धान्त।

सन्दर्भ ग्रन्थसूची:-

1. सिंह अरुण कुमार, शिक्षा मनोविज्ञान, भारती भवन आगरा।
2. शर्मा, आर.ए. शिक्षा अधिगम में नवीन प्रवर्तन, आर लाल बुक डिपो मेरठ।
3. श्रीवास्तव, डी. एन. आधुनिक प्रयोगात्मक मनोविज्ञान, आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर।
4. सिंह, अरूण कुमार उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान, नई दिल्ली, मोती लाल बनारसी दास।
5. सिंह, अरूण कुमार (२०००) मनोविज्ञान के सम्प्रदाय एवं इतिहास, दिल्ली।
6. सिंह, डॉ. वृन्दा (२०१७) बाल विकास, जयपुर, पंचशील प्रकाशन।

आन्तरिक मूल्यांकन 30 अंक

1. सृजनात्मक बालक का अध्ययन करना।
2. मानसिक मन्दबालकों का उपचारात्मक मूल्याकन करना।
3. विकास के विभिन्न आयामों पर प्रतिवेदन तैयार करना।